IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मुक्ति : वेदान्त दर्शन के अनुसार

माहिमाइ माण्डि

असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र

बर्धमान राज कालेज

बर्धमान, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

आत्मा, किसी व्यक्ति का सार है। ये शरीर से जुड़ा हुआ है और मृत्यु पर अलग हो सकता है। आत्मा की अवधारणा लगभग सभी संस्कृतियों और धर्मों में पाई जाती है, हालांकि इसकी प्रकृति की व्याख्या काफी भिन्न होती है। कहा गया है कि आत्मा अविनाशी है , इस पर किसी भी प्राकृतिक भाव का असर नहीं होता. आत्मा पर किसी भी प्रकार की चीजें असर नहीं करती. आत्मा का एक ही स्वाभाविक गुण है , स्वाभाविक रूप से प्रसार करना और ईश्वर में विलीन होना. जब तक आत्मा ईश्वर के अपने मुख्य बिंदु तक नहीं पहुंचती, तब तक शरीर बदलता रहता। शंकराचार्य आत्मा को ब्रह्म कहता है। आत्मा ही एकमात्र सत्य है, पारमार्थिक है।

मुख्य बिन्दु: शरीर, आत्मा, ब्रह्म, मुक्ति, आत्मा की लक्ष

१.प्रस्तावना

आत्मा या आत्मन् पद भारतीय दर्शन के महत्त्वपूर्ण प्रत्ययों में से एक है । उपनिषदों में आत्मा अजर, चैतन्य,अमर, निर्विकार है। जहाँ इससे अभिप्राय व्यक्ति में अन्तर्निहित उस मूलभूत सत् से किया गया है जो कि शाश्वत तत्त्व है तथा मृत्यु के पश्चात् भी जिसका विनाश नहीं होता। आत्मा का निरूपण श्रीमद्भगवदगीता या गीता में किया गया है। आत्मा को शस्त्र से काटा नहीं जा सकता, अग्नि उसे जला नहीं सकती, जल उसे गीला नहीं कर सकता और वायु उसे सुखा नहीं सकती। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को त्याग कर नवीन शरीर धारण करता।

ब्रह्म सद्चिदानन्द है। हिन्दू (वेद परम्परा, वेदान्त और उपनिषद) दर्शन में इस सारे विश्व का परम सत्य है और जगत का सार है। वो दुनिया की आत्मा है। वो विश्व का कारण है, जिससे विश्व की उत्पत्ति होती है, जिसमें विश्व आधारित होता है और अन्त में जिसमें विलीन हो जाता है। वो एक और अद्वितीय है। वो स्वयं ही परमज्ञान है, और प्रकाश–स्रोत की तरह रोशन है। वो निराकार, अनन्त, नित्य और शाश्वत है। ब्रह्म सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है।

वेदान्त ज्ञानयोग की एक शाखा है जो व्यक्ति को ज्ञान या सत्य प्राप्ति की दिशा में उत्प्रेरित करता है। इसका मुख्य स्रोत उपनिषद है जो वेद ग्रंथो और अरण्यक ग्रंथों का सार समझे जाते हैं। उपनिषद् वैदिक साहित्य का अंतिम भाग है, इसीलिए इसको वेदान्त कहते हैं। कर्मकांड और उपासना का मुख्यत: वर्णन मंत्र और ब्राह्मणों में है, ज्ञान का विवेचन उपनिषदों में। 'वेदान्त' का शाब्दिक अर्थ है – 'वेदों का अंत' (अथवा सार)। वेदान्त की तीन शाखाएँ जो सबसे ज्यादा जानी जाती हैं वे हैं: अद्वैत वेदान्त, विशिष्ट अद्वैत और द्वैत। आदि शंकराचार्य, रामानुज और श्री मध्वाचार्य जिनको क्रमश: इन तीनो शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है, इनके अलावा भी ज्ञानयोग की अन्य शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ अपने प्रवर्तकों के नाम से जानी जाती हैं जिनमें भास्कर, वल्लभ, चैतन्य, निम्बारक, वाचस्पति मिश्र, सुरेश्वर और विज्ञान भिक्षु। आधुनिक काल में जो प्रमुख वेदान्ती हुये हैं उनमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, स्वामी शिवानंद प्रमुख उल्लेखनीय है।

२.विदेहमुक्त

विदेहमुक्ता एक ऐसा शब्द है जो एक ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसने मृत्यु में मुक्ति प्राप्त कर ली है, और ब्रह्म, सार्वभौमिक चेतना के साथ अपनी आत्मा या व्यक्तिगत आत्मा के अद्वैत को महसूस करता है। यह एक अवधारणा है जो विशेष रूप से हिंदू धर्म और जैन धर्म में पाई जाती है, जहां यह पुनर्जन्म के चक्र को समाप्त करने से संबंधित है। यह वेदांत और योग दर्शन में भी महत्वपूर्ण है।

विदेह मुक्ति (संस्कृत : विदेहमुक्ति का अर्थ है "मृत्यु के बाद मुक्ति या शाब्दिक रूप से शरीर से मुक्ति") मृत्यु के बाद मोक्ष (मृत्यु और पुनर्जन्म चक्र से मुक्ति) को संदर्भित करता है। यह संसार (मृत्यु और पुनर्जन्म का चक्र) को समाप्त करने के संबंध में हिंदू और जैन धर्म में पाई जाने वाली एक अवधारणा है । अवधारणा जीवनमुक्ति के विपरीत है , जो "जीवित रहते हुए मुक्ति" प्राप्त करने को संदर्भित करती है। जीवनमुक्ता और विदेहमुक्ता की अवधारणाओं पर विशेष रूप से वेदांत और योग विद्यालयों में चर्चा की जाती है।

हिंदू परंपरा में ये विश्वास है कि मनुष्य अनिवार्य रूप से एक आध्यात्मिक आत्मा है जिसने शरीर में जन्म लिया है। जब एक आत्मा ने मुक्ति प्राप्त कर ली है तो यह मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होने के लिए कहा जाता है। अद्वैत वेदांत , एक व्यापक हिंदू दर्शन के अनुसार , एक आत्मा को या तो जीवित रहते हुए या मृत्यु के बाद मुक्त किया जा सकता है। विदेहमुक्ति तुरीय से परे की अवस्था के रूप में जीवित रहते हुए मुक्ति का प्रतीक हो सकता है, जब मन विलीन हो जाता है और इसमें जरा सा भी भेद या द्वैत नहीं होता है। मुक्ति प्रमुख विश्व धर्मों में से प्रत्येक का लक्ष्य है, और इस प्रकार यह महान धर्मों की एक एकीकृत विशेषता के रूप में कार्य करता है, जो सतह पर दिखाई देने वाले मतभेदों को समेटता और एकीकृत करता है। मेहर बाबा , जिन्होंने पारसी धर्म की शुरुआत की, और शुरू में एक मुस्लिम पवित्र महिला से प्रभावित थी, और जिसने सूफी (इस्लामी) और वेदांतिक (हिंदू दार्शनिक) विचारों और शर्तों को एकीकृत किया, अपनी पुस्तक गॉड स्पीक्स , पूरक 24 में मुक्ति का एक बहुत विस्तृत और पूर्ण विवरण देती है। मुक्ति आत्मा की यात्रा का अंत है, और इसलिए यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अंतिम लक्ष्य और गंतव्य है, और स्वयं सृष्टि का लक्ष्य है।

३. जीवन्मुक्त

मोक्ष प्राप्त कर आत्मा ब्रह्म के साथ एक जाता है, आनन्दमय रहेगा, जन्म मरण चक्र से मुक्त हो जाता है। शंकराचार्य के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के बाद भी मानव का शरीर कायम रह सकता है। मोक्ष का अर्थ शरीर का अन्त नहीं है। व्यक्ति शरीर प्रारब्ध कर्म का फल है। इनका कर्मफल समाप्त नहीं हो तक शरीर विद्यमान रहता है। जिस तरह कुम्हार का चाक, कुमार कुम्हार घुमाना बन्द कर देने बाद भी कुछ समय तक चलते रहते है, उस तरह मोक्ष प्राप्त व्यक्ति का शरीर पूर्व जन्म के कर्मो के अनुसार कुछ काल जीवित रहता है। इसे जीवन–मुक्ति कहते है। जीवन मुक्त व्यक्ति संसार में रहता है फिर संसार द्वारा आसक्त नहीं हो जाता है।

४. आत्मा ब्रह्म ही है

वेदान्त दर्शन के अनुसार आत्मा स्वयं सिद्ध है। आत्मा और ब्रह्म में कोई अंतर नहीं है। ब्रह्म के साक्षात्कार से आत्मा परब्रह्म में सम्यक् रूप से प्रतिष्ठित होकर देह आदि के विकार से शून्य, विशुद्ध रूप को प्राप्त करती है। उस समय मुक्त पुरुष परमात्मा से अभिन्न रूप में अपना अनुभव करते हैं और उन्हें सभी के परमात्म स्वरूप में दर्शन होते हैं। विदेहमुक्त पुरुषों के बंधनमुक्त होने के कारण ब्रह्म से भिन्न बुद्धि उनमें स्फुरित नहीं होती, जिससे ब्रह्मरूप में ही उन्हें सबके दर्शन होते हैं। विदेह मुक्तावस्था में जीवात्मा केवल चैतन्य मात्र स्वरूप ब्रह्म को प्राप्त होकर केवल चैतन्य रूप में आविर्भूत होती है इसलिए उसे 'प्रज्ञानधमन' कहा है। चिन्मात्र होने पर भी विदेह मुक्तावस्था को सत्यसंकल्प आदि ऐश्वर्य से विशिष्ट माना गया है। इसीलिए कहा है कि मुक्त पुरुष यदि पितृलोक दर्शन की इच्छा करें तो उनके संकल्पमात्र से उनके समीप पितृगण का आगमन हो सकता है। मुक्त पुरुषों के शरीर और इंद्रिय आदि नहीं होते, अतएव प्रिय और अप्रिय उन्हें स्पर्श नहीं करते। परम ज्योति स्वरूप को प्राप्त तथा संसार से मुक्त ऐसे पुरुषों का संसार में पुनरागमन नहीं होता। वे स्वाभाविक, अचिंत्य, अनंत गुणों के सागर और सर्वविभूति से संपन्न ब्रह्म के स्वरूप में अपने आपका अनुभव करते रहते हैं। अंतिम उपाधि नष्ट होने पर जब ब्रह्मज्ञ पुरुषों की देह का अंत हो जाता है तो ब्रह्मरंध्र को भेदकर वे इस देह से सूक्ष्म शरीर द्वारा निर्गत होते हैं और अचिरादि मार्ग का अवलंबन कर ब्रह्मलोक को प्राप्त करते हैं। यहाँ उनके सूक्ष्म देह के अंतर्गत इंद्रि आदि ब्रह्म रूप में समता को प्राप्त होते हैं, और अपने चित् रूप में अवस्थित होकर, ब्रह्म का अंग होने के कारण, वे सर्वत्र अभेददर्शी और ब्रह्मदर्शी हो जाते हैं। ध्यानमात्र से ही उनमें सब विषयों का ज्ञान उत्पन्न होता है और उनकी इच्छा अप्रतिहत होती है। वे चाहें तो देह धारण भी कर सकते हैं, किंतु ब्रह्म से अभिन्न हो जाने के कारण जगत् की सृष्टि के प्रपंच आदि के प्रति उनकी इच्छा नहीं रहती।

५. निष्कर्ष

भौतिक शरीर से,जन्म– मरण चक्र से मुक्त होना ही आत्मा का उपजीव्य है। हम सभी यह तो जानते हैं कि आत्मा सूक्षम रूप में हमारे शरीर में विद्मान रहती है। इस लिए यह आत्मा सूक्षम रूप में रहते हुए भी इस भौतिक शरीर से स्वतंत्र होना चाहती है और अपने मूल स्वरूप अर्थात परमात्मा में विलीन होना चाहती है ।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने आत्मा को अमर और अविनाशी बताया है । उसे कोई अस्त्र कट नहीं सकता, पानी इसे गला नहीं सकता, अग्नि इसे जल नहीं सकती, वायु इसे सोख नहीं सकती। यह तो ऐसा जीव है जो व्यक्ति के कर्मफल के अनुसार एक शरीर से दूसरे शरीर में भटकता रहता है।

मोक्ष प्राप्त होने के बाद जगत् संसार में कोई परिवर्तन नही होगा, लेकिन आत्मा का जगत् के प्रति दृष्टिकोण बदल जायेगा। सारे दुःख की कारण मिथ्या ज्ञान का भ्रान्ति है। ये मिथ्या ज्ञान का भ्रान्ति से मुक्त हो जाता तो दुःख से भी मुक्ति मिल जाती है। मोक्ष के अवस्था में जीवात्मा ब्रह्म से एकाकार हो जाता है। ब्रह्म दुःख रहित, आनन्दमय है। इसलिए मोक्ष प्राप्त व्यक्ति आनन्दमय रहेगा। ये ही मानव जीवन का परम चाहत है।

संदर्भ

१.प्रो॰ हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा – भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रकाशक– मोतिलाल बनरसीदास, 2016

२.डा॰ शोभा निगम– भारतीय दर्शन, प्रकाशक– मोतिया बनारसीदास, नई दिल्ली, चतुर्थ संशोधित संस्करण : 2011

३.डॉ राधाकृष्णन् – भारतीय दर्शन भाग–1, राजपाल एंड सन्स पब्लिशर्स, 2015

४.https://en.wikipedia.org